शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN

ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-3 Issue-1
15 Jan-2012

मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य पर सार्थक शोध

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी, भगवानदीन आर्यकन्या स्नात0 महाविद्यालय, लखीमपुर-खीरी-262701

www.shodh.net

मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य पर सार्थक शोध

'मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी पात्रों का विवेचन'
शोध छात्रा- श्रीमती पायल राय
छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
उपाधि वर्ष-2011

श्रीमती पायल राय ने 'मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी पात्रों का विवेचन' विषय पर छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर से शोध कार्य किया है। 31 मई 2011 को शोधार्थिनी को शोध उपाधि प्राप्त हुई है। प्रस्तुत शोध ग्रंथ शोध मानकों के आधार पर उत्तम शोध कार्य को दर्शाता है। शोध विषय की दृष्टि से मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी पात्रों का विवेचन सर्वथा नवीन एवं प्रासंगिक विषय है। इस शोध कार्य का फलक अत्यन्त विस्तृत है। इस विषय पर पूर्व में प्रकाशित या अप्रकाशित शोध कार्य देखने में नहीं आया है। यह शोध कार्य तथ्य चयन पद्धति, विषय निर्वाचन तथा विश्लेषण-विवेचन की दृष्टि से भी सर्वथा नवीन एवं मौलिक है। इस शोध कार्य में मूल तथ्यों का चयन मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों तथा कहानियों से किया गया है। इन तथ्यों में निहित सत्य को विश्लेषित करके उसकी समग्रता तथा सत्यता को वांछित तथ्यों से साक्ष्यांकित किया गया है। इस शोध कार्य में नितान्त वस्तुनिष्ठ पद्धति को अपनाया गया है। शोधार्थिनी ने मैत्रेयी पुष्पा के नौ उपन्यासों बेतवा बहती रही, इदन्नमम्, चाक, झूलानट, अल्मा कबूतरी, अगनपाखी, विजन, कही ईसुरीफाग, त्रियाहठ व तीन कहानी संग्रहों-चिन्हार, ललमनियाँ, गोमा हँसती है, से तथ्यों का संकलन कर उनका अनुशीलन किया है। यह शोध कार्य मैत्रेयी जी के कथा साहित्य के समग्र वर्ण्य-विषय से सम्बद्ध न होकर समाज के एक अंग 'नारी' से जुड़ा हुआ है। 'नारी' समाज की निरपेक्ष इकाई नहीं है। 'नारी' शिक्षा, संस्कृति, धर्म, राजनीति, अर्थ, दर्शन, वाणिज्य, उद्योग, विज्ञान तथा मनोविज्ञान सभी से प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों ही प्रकार से सम्पर्कित तथा सम्बर्द्धित है। यह शोध कार्य नारी को एकल तथा संयुक्त अर्थात् स्वतंत्र तथा सापेक्ष दोनों रूपों में ग्रहण करता है। शोधार्थिनी ने स्त्री अस्तित्व और अस्मिता के प्रश्न को उठाते हुए स्त्री उत्पीड़न में दोषी पुरूषसत्तात्मक समाज एवं पारम्परिक मान्यताओं को माना है। शोधार्थिनी ने नारी पात्रों को प्रभावित करने वाले परम्परावादी, आधुनिक तथा संक्रमणशील तत्वों को वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषित किया है। शोधार्थिनी के अनुसार मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य स्त्री विमर्श पर लिखने वाले सभी कथाकारों से भिन्न है क्योंकि मैत्रेयी पुष्पा परिवर्तनकामी स्वस्थ विचारधारा की संपोषक हैं।

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया का शोधार्थिनी को यथा सम्भव ज्ञान है। शोधार्थिनी ने सर्वप्रथम प्राक्कथन के द्वारा 'मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य' पर शोध कार्य ही क्यों ? इस प्रश्न को उठाया है साथ ही शोध कार्य को करते समय आई अनेक कठिनाइयों का भी उल्लेख किया है। शोध प्रबंध को लिखते समय पूर्वानुबन्ध एवं पश्चानुबन्ध का प्रयोग किया गया है। पूर्वानुबन्ध में भूमिका, विषय सूची तथा पाद टिप्पणी का प्रयोग किया गया है। भूमिका में शोधार्थिनी ने पूर्व कार्यो का परिचय, पूर्व कार्यो की उपलब्धियाँ, पूर्व शोध कार्यो की प्रविधि का परिचय दिया है। साथ ही प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के औचित्य एवं प्रयोाजन का उल्लेख करते हुए प्रयुक्त शोध पद्धति एवं प्रक्रिया पर विस्तारपूर्वक चर्चा की है। निरपेक्ष रूप से यह शोध कार्य निस्संग विश्लेषण-विवेचन की वैज्ञानिक कसौटी प्रदान करेगा। भावी शोधार्थियों को इससे शोध पद्धति तथा प्रक्रिया का ही ज्ञान नहीं होगा अपितु तथ्यों की प्रकृति, प्रकार्यता तथा भेदकता का भी ज्ञान होगा। शोधार्थी ने शोध पद्धति का उल्लेख करते हुए स्पष्ट किया है कि उसने तथ्यानुसंधान के स्थान पर तथ्याख्यान शोध कार्य किया है। तथ्याख्यान जिसमें उपलब्ध तथ्यों के विश्लेषण विवेचन से प्राप्त उनमें छिपे हुए जीवन मूल्यों एवं सत्यों का निर्धारण किया जाता है। उस दृष्टि से यह शोध कार्य तथ्याख्यान पर आधारित है। वर्तमान वैज्ञानिक शोधयुग में तथ्याख्यान शोध की आवश्यकता है।

शोधार्थिनी ने लेखिका के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का भी विशद विवेचन किया है लेखिका से स्वयं साक्षात्कार कर उनके व्यक्तित्व के विभिन्न अनछुए पहलुओं को छुआ है। इस शोध प्रबंध में कथा तत्वों के साथ साहित्येतर विषयों समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, मनोविज्ञान एवं लोकसंस्कृति का परस्पर सापेक्ष सम्बन्ध दर्शाया गया है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री जीवन में समयानुसार आए परिवर्तनों का सम्यक अंकन है तो साथ ही समाजशास्त्रीय दृष्टि से ग्रामीण, नगरीय,

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN

ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-3 Issue-1
15 Jan-2012

मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य पर सार्थक शोध

डॉ0 बीना रानी गुप्ता

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी, भगवानदीन आर्यकन्या स्नात0 महाविद्यालय, लखीमपुर-खीरी-262701

www.shodh.net

महानगरीय परिवेशों से प्रभावित नारी जीवन का सूक्ष्मांकन है।

तथ्यों के संग्रह विश्लेषण, विवेचन तथा मूल्यांकन की प्रतिभा से शोधार्थिनी की शोध क्षमता प्रकट होती है। शोधार्थी को साक्षात्कार के समय पूर्वाग्रह रहित, तटस्थ एवं वैज्ञानिक दृष्टि से युक्त होना आवश्यक है तभी उसक निष्कर्ष प्रामणिक एवं वैज्ञानिक हो सकते हैं। कथा साहित्य में वर्णित नारी पात्रों के स्वरूप व उन पर प्रभाव डालने वाले कारकों के सन्दर्भ में शोधार्थिनी ने मैत्रेयी पुष्पा के नोएडा स्थित आवास पर साक्षात्कार भी लिया है। शोध प्रबन्ध में इस साक्षात्कार को सम्मिलित किया गया है। साक्षात्कार द्वारा यह ज्ञात करने में सरलता हुई है कि लेखिका भले ही नारी को विविध रूपों में चित्रित करती है लेकिन वास्तव में वह किस प्रकार की नारी के रूप की अभिलाषा करती है। 21वीं सदी की नारी के बारे में लेखिका कहती है कि 'वो सारंग होगी, तो अल्मा होगी, मंदा होगी, कुसुमा भाभी होंगी। यही नायिकाएँ ही मेरी आकाँक्षाएँ है। ये नये समाज का निर्माण करेंगी।' शोधार्थिनी ने लेखिका से बेबाक बातचीत के जरिए प्राप्त विचारों एवं कथा साहित्य में निहित विचार का तुलनात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष भी दिए हैं।

निष्कर्ष रूप में लेखिका द्वारा अभिलषित नारी में संघर्ष, जुझारूपन, साहस व चेतना सम्पन्नता आदि गुणों का प्राधान्य देखा सकता है। यह नारी अज्ञानता और अंधविश्वास के कारण रूढ़ियों में नहीं फँसती बल्कि पुरूषसत्ता के वर्चस्व को चुनौती देती है। राजनीति में अपना प्रभुत्व स्थापित करती हुई तथाकथित यौन शुचिता के मानदण्ड स्वीकार न करती हुई नैतिक वर्जना को चुनौती देती हुई अपनी कथा स्वयं लिखती हुई आगे बढ़ती दिखती है।

शोधार्थिनी ने मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में चित्रित नारी समाज के विभिन्न वर्गो उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग, शिक्षित-अशिक्षित, शहरी-ग्रामीण, शोषित-शोषक, परम्परा-परम्परामुक्त, आधुनिक-रूढ़िवादी सभी रूपों का चित्रण किया है। पुरातन जीवन मूल्य कभी स्त्री अस्तित्व एवं अस्मिता पर चोट करते हैं तो कभी चुनौती देते हैं। शोधार्थिनी की दृष्टि में मैत्रेयी पुष्पा की नारी जुझारू, स्वाभिमानी एवं साहसी है। शोधार्थिनी ने लेखिका के कथा लेखन की विभिन्न शैलियों के उल्लेख के साथ लोक कथात्मक शैली का वर्णन किया है। लोककथात्मक शैली का प्रयोग लेखिका की लोकोन्मुखता को व्यंजित करता है।

भाषा के स्तर पर कथा साहित्य का विभाजन भाषा वैज्ञानिक चिन्तन पर आधारित है। बुंदेलखण्ड एवं ब्रज समाज के जन जीवन के साथ जुड़े लोकगीत, मुहावरे तथा ठेठ देशी ग्रामीण गालियों के प्रयोग आंचलिकता को प्रकट करते हैं।

उपन्यास 'चाक' व कहानियाँ 'ललमनियाँ' व 'रास' में ब्रजभाषा की मिठास व लयात्मकता पात्रों के संवादों व लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त हुई है। 'रास' कहानी की जैमन्ती द्वारा गाया गया ढोला दृष्टव्य है। मोहरो द्वारा गाया जाने वाला ललमनियाँ गीत ब्रज की संस्कृति से बखूबी परिचित कराता है। भाषागत अध्ययन में शोधार्थिनी ने ब्रजभाषा के अतिरिक्त बुंदेली को मुख्य रूप से लक्षित किया है और स्पष्ट किया है कि मैत्रेयी जी अपने पात्रों से नैतिक मूल्यों, मान्यताओं को तोड़ने और नई संवेदना को वहन करने के लिए अपने पात्रों से बेलौस भाषा का प्रयोग करवाने में भी नहीं हिचकती हैं।

शोधार्थिनी ने नारी पात्रों का अध्ययन नारी मनोविज्ञान के आधार पर भी किया है क्योंकि नारी मनोविज्ञान नारी के चरित्र एवं व्यक्तित्व को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्ययन करने पर कुंठित, ईष्यालु, अहंकारी अतिसहनशील, मातृत्व की आकांक्षी, एकाकीपन का अनुभव करने वाली, मूल्य संघर्ष में फँसी, प्रतिशोध लेने वाली, कामजनित समस्याओं से ग्रस्त नारी पात्र कथा साहित्य में देखने को मिलते हैं। कुल सत्रह मनोवैज्ञानिक कारण हैं जो कि नारी पात्रों को प्रभावित करते हैं। सबसे ज्यादा कामजनित समस्याओं से ग्रस्त नारी पात्र उपलब्ध होते हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य ज्ञान क्षेत्र की सीमाओं का विस्तार करने में सक्षम है। विषय की मौलिकता, विषय की प्रकृति तथा विवेचन पद्धति के कारण नवीन शोध कार्य कहलाने योग्य है। किसी भी अछूते विषय पर किया गया शोध कार्य नवीन ज्ञान की स्थापना करने में सक्षम होता है। 'एक उत्तम 'शोध प्रबंध' तथ्याख्यान, मौलिकता, प्रक्रिया, प्रविधि तथा व्यवस्था का समन्वित रूप होता है।' इस दृष्टि से प्रस्तुत शोध प्रबंध में उपर्युक्त सभी गुण परिलक्षित होते हैं।